प्रथम अध्याय

राजेन्द्र यादव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय

राजेन्द्र यादव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ---

राजेन्द्र यादव सफल उपन्यासकार एवं कहानीकार माने जाते हैं । साहित्य के विविध कोनसे उपन्यास,कहानी ,नाटक आदि क्षेत्रोंमें आपने साहित्य लेखक किया और आज के साहित्य को नयी प्रगति की राह दिखाई, आपका साहित्य परम्पराप्रियता की अन्धी गली को प्रगति और प्रयोगों की ज्योति से जगमगानेवाला साबित हुआ । आपकी विशेषता यही रही है कि आपने पूरा जीवन साहित्य के लिए प्रतिबध्द किया ।

व्यक्तित्व --

राजेन्द्र यादव हिन्दी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर समझे जाते हैं । वे स्वातन्त्र्योत्तर काल के महत्वपूर्ण साहित्यकार माने जाते हैं । उनके व्यक्तित्व के बारेमें बहुतही कम जानकारी मिलती है । अपने व्यक्तित्व का परिचय देना उसको जरुरी नहीं लगता । उनका वही व्यक्तित्व और वही परिचय वास्तविक है,जो उनकी रचनाओंमें है । कलाकार का व्यक्तित्व उसकी कला है, अपनी कलासे उसका व्यक्तित्व अलग हो नहीं सकता इस बात में उनका पूरा विश्वास है । राजेन्द्र यादवजी के व्यक्तित्व का प्रमुख पहलू लेखकीय व्यक्तित्व है । राजेन्द्र यादव ने व्यक्तिगत जीवन में जो देखा,सुना,भुगता,अनुभव किया उन सब को अपने लेखन का अंग बना दिया ।

(१) जन्म --

स्वातंत्र्योत्तर सुप्रसिध्द हिन्दी लेखक राजेन्द्र यादव का जन्म २८ अगस्त, १९२९ को उत्तरप्रदेश के आगरा शहर में हुआ । आगरे के राजा की मंडी नामक मुहल्ले में उनका पैतृक घर है और इसी घर में अपने माता-पिता की प्रथम सन्तान के

रुपमें राजेन्द्र का जन्म घरवालों के लिए आनन्दोत्सव ही था ।

माता-पिता --

श्री गोकुलसिंग यादव इनके छ: बेटे थे, जिनमें चौथे क्रमांक के बेटे का नाम था मिस्त्रीलाल । मिस्त्रीलाल ने इंटर पास कर जीविका के लिए डॉक्टरी पेशा अपना लिया । विवाह के उपरान्त डॉक्टर मिस्त्रीलाल गृहस्थ बनकर वैवाहिक जीवन बिताने लगे थे कि अकस्मात पत्नीका देहान्त हुआ । डॉक्टर मिस्त्रीलाल ने ताराबाई से दूसरा विवाह किया । राजेन्द्र यादव इसी दम्पति की सन्तान हैं । साहित्य के प्रति उनके मनमें आकर्षण था । देवकी नन्दन खत्री लिखित `चन्द्रकान्ता सन्तति` उपन्यास पढने के लिए उन्होंने हिन्दी सीखी थी । पिता की वरद् छाया सन् १९५३ तक रही ।

परिवार --

राजेन्द्र यादव तीन भाई तथा छ: बहनोंके बडे भाई हैं । अपने माता-पिता का पहला बच्चा होने के कारण राजेन्द्र को उनसे काफ़ी प्यार मिला । छ: बहनोंमेंसे एक की मृत्यु हुई और शेष पाँच में से दो दिल्ली में, दो जयपुर में तथा एक अमरीका में स्थायी हो चुकी हैं । ये सारी बहनें एम.ए. तक पढी हैं । तीनों भाईयोंमेंसे दो आगरा में और एक फिरोजपुर में स्थायी हुआ है । राजेन्द्र यादव के परिवार के सभी सदस्य शिक्षित हैं ।

शिक्षा --

पिता मिस्त्रीलाल यादव को उर्दू में रुचि थी अत: राजेन्द्र को प्राथमिक शिक्षा उर्दू में दी गई । प्रेमचन्द के समान ही राजेन्द्र यादव पहले उर्दू में पढे और बाद में हिन्दी में आये । बचपन में नौ दस साल की आयुमें उनकी टाँग टूट गई थी । इस विकलांगता ने उन्हें प्रभावित किया और उनकी शारीरिक गतिविधियाँ सीमित हो गई । इस पूर्ति के लिए मानसिक या बौद्धिक क्षेत्र में उन्होंने अपनी गतिविधियाँ बढाई । छोटी-सी आयु में ही दुनिया के सबसे बडे उपन्यास `दास्तान-ए-अमीर हम्जा` को पढ लिया था । बचपन के दिनोंमें उन्होंने भिक्खी चाटवालेसे कहानियाँ सुनी थी । छोटी उम्र में ही राजेन्द्र को पढने का शौक लगा था । राजेन्द्र की

मैट्रिक तक की पढाई झाँसी में और उसके आगे की पढाई आगरे में हुअी ।

विवाह --

राजेन्द्र की पत्नी मन्नू भंडारी सफल लेखिका हैं । लेखन की वजहसे राजेन्द्र यादव तथा मन्नू भंडारी का परिचय घनिष्ठता में बदल गया । और घनिष्ठता का परिवर्तन प्रेम में हुआ । मन्नू भंडारी राजेन्द्र की सिर्फ भार्या नहीं हैं, इसलिए राजेन्द्र और मन्नू का नाता समस्तरीय मित्रता का नाता पहले हैं । दोनों पति - पत्नी के रूपमें साथ रहते हुए एक दूसरे के व्यक्तित्वोंका आदर करते हुए अपनी - अपनी जिन्दगी जीते हैं । इसी कारण मन्नू विवाह के बाद भी 'भंडारी' बनी रही हैं । मन्नू के साथ बीता वैवाहिक जीवन-काल राजेन्द्र यादव के साहित्य की दृष्टिसे अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं । १७ जून, १९५१ को उनके एक पुत्री हुअी । पुत्री का आगमन उनके लिए सन्तोषप्रद था । दोनोंने उसका नाम रचना रखा, चूँकि यह लडकी भी दोनोंका सृजन थी । लेखन की तरह रचना को वे बेहद प्यार करते हैं । उसकी खुशी में अपनी खुशी मानी ।

लेखकीय व्यक्तित्व की समस्याओंपर राजेन्द्र ने पर्याप्त सोचा हैं । उन्होंने कलाकार पात्रों के माध्यम से कला एवं कलाकार के सम्बन्ध में पर्याप्त चिन्तन किया हैं । हिन्दी के किसी भी लेखक की तुलनामें उनके साहित्य में कलाकार पात्रों की संख्या अधिक हैं । कला अपने साधक से सम्पूर्ण समर्पण चाहती हैं । कलाकार चरित्र की यह महत्वपूर्ण समस्या हैं । कला महलोंमें नहीं पलती । अभावमें गति हैं, और गति कलाका प्राण हैं । कला सबसे ज्यादा ईर्ष्यालु पत्नी हैं । राजेन्द्र यादव के व्यक्तित्व के परिचय में हर वक्त 'किसी-न-किसी प्रेत छाया का मीडियम बनकर जीने की बात का उल्लेख हुआ हैं ।

दरअसल यह आदमी चिर किशोरावस्थामें रहना चाहता हैं । शायद वह सबसे बेहतरीन, निश्चिन्त और कुलांचे मारनेवाली उम्र होती हैं । साक्षात्कार में राजेन्द्र यादव के साथ सुरेश पचौरी के साथ अंतरंग बातचीत हुई । तब उन्होंने अपने साठ साल की आयुके बारेमें उनसे बातचीत की । लेकिन उन्हें साठ वर्ष का होनेसे बहुत चिढ हैं । आप पूछिए, कहिए कि साठके होनेपर कैसा लगता हैं तो राजेन्द्र यादव चिढकर कह सकते हैं कि, अरे काहे के साठ के । हम नही हुए अभी

साठ के । जब दूसरे लोग साठके हुआ करते थे, उनके आयोजन और समारोह होते थे तो हमें हँसी आती-सारा दृश्य बड़ा हास्यास्पद लगता था । एक उल्लू का पट्ठा गुड्डे की तरह सजा-सजाया मंचपर बैठा आत्म-मुग्ध भावसे मुस्करा रहा है । लोग मालाएँ पहना रहे हैं । इसी बात को लेकर राजेन्द्र यादव के मन में अनेक प्रश्न खड़े हो जाते हैं -- क्या मेरे साथ भी यही होने जा रहा है ? और आखिर यह दुर्घटना उनके साथ हो ही गयी । सुखद संयोग हम लोग हमेशा अपने लिए चुनते हैं - शायद लॉटरी मेरे ही नाम निकल आये । दुर्घटनाएँ हमेशा दूसरों के साथ घटित होती हैं । क्या लाखों घर छोडकर बम सीधे हमारे यहाँ ही गिरेगा ?

अपने साठ साल के जीवन और चालीस सालके लेखन के बाद यह शायद वह समय होता है जब लेखक अपनी अब तक की लेखन यात्रा और जीवन के यात्रा का पुन-रावलोकन करता है वह यह आकलन करने की कोशिश करता है कि इस यात्रा में उसने क्या खोया है और क्या पाया है ? उसके कितने सपने पूरे हुए और कितने अधूरे रह गये ? क्या सब कुछ वैसा ही घटा है जैसा उसने चाहा था ?

अपने साठ साल के होने पर अपने मन की बातों को सारीका में प्रकट करते हैं । शायद मैं वह नहीं हूँ जो दिखायी देता हूँ क्या हूँ मैं खुद भी नहीं जानता । बस यही एक भावना शिद्ददतसे छटपटाती है कि अभी ये सारे जामे लबादे उतारकर बहुरूपिये की तरह अपनी असलियत को धमा के से प्रकट कर डालूँ मगर कौनसी असलियत ? इसी संभ्रम में सिर्फ गालिब की तरह यही कहने को मन करता है कि 'बनाकर फकीरों का हम भेस गालिब, तमाशाए अहले करम देखते हैं ... कभी भी होती है कि जो इस फकीरी भेस तक ही रह जाते हैं, क्या उन्हें पता है कि भीतर कौन-सा प्यार बैठा है ।

दरअसल उस उम्र की ओर हम बार-बार लौटते हैं, जो हमारी सबसे भावनाप्रधान रही है और जो अनुभव हमने उस उम्र में हासिल किये होते हैं । किशोरा-वस्थाका जगत् बेहद अदूषित होता है । कच्चे मिट्टीके लौंदे की तरह के अनुभव होते हैं । वे ही जीवन भर हमें आकार देते हैं । जब जीवन रुकने लगता है तो हम

बार-बार वहाँसे जीवन लाते हैं, प्रेरणा लाते हैं । आदमी वर्तमान को पार करके स्मृतिके जरिये जाता है, यही तो स्मृति है उनकी, यही तो संपत्ति है राजेन्द्र यादवजी की ।

हममेंसे अधिकांश अपने कीमती कागजों की मूल प्रति कहीं तिजोरियों लॉकरों या अलमारियोंमें बन्द रखते हैं और अपने साथ लिये फिरते हैं प्रतिलिपियाँ कल अगर यह प्रतिलिपियाँ नष्ट हो जायें या खोजायें तो मूल प्रति बची रहे । क्या सारे बहुरूपिये अपने मूल चेहरे को कहीं सुरक्षित जगहोंपर छोड आते हैं। और सिर्फ मुखौटोंके सहारे ही जिन्दगी काट देते हैं ? एक विशेषज्ञ मेकअपमें रहनेवाली सुन्दरी जब लोगोंको अपने रूपपर मुग्ध होते देखती है तो कहीं यह आशंका भी उसका लगातार कचोटती ही होगी कि किन्हीं आत्मीय क्षणोंमें इनमेंसे किसी ने असली रूपको देख लिया तो ? क्या गुजरेगी उसपर और वह आत्मीय क्षण हमेशा स्थगित होता रहता है, अभिनन्दन और प्रशंसाएँ बटोरता `मेकअप` ही हम सबके लिए असली व्यक्ति बन जाता है ।

इसी बातको लेकर राजेन्द्र यादव अपने बारेमें यह कहते हैं -- बहरहाल जो भी कुछ हूँ वह प्रतिलिपि हो, मेकअप हो, मुखौटा हो या स्वभाव अपना विस्तार हो आप सबका दिया हुआ है । मैं अपनी आंतरिक ईमानदारीसे स्वीकार करता हूँ कि जो कुछ मेरे भीतर अच्छा, प्यारा या जीवन्त है वह सब कुछ मित्रों, आत्मीयों और मेरे अंतरंगोंने दिया है, और जो कुछ गलत, खराब या अरुचिकर है वह सब मेरी अपनी कमाई है । चाहे तो इसे आत्म स्वीकृति कह लें कि मैं आप सभी का बहुत कृतज्ञ हूँ । लोग शिकायतें करते हैं कि जिन्दगी में उन्हें कटुता, विश्वासघात, अपमान और गलत पहचानें ही मिली हैं । लोगोंने उनके साथ न्याय नहीं किया । यह बात नहीं कि यह सब उनके साथ नहीं हुआ है । लेकिन उनके मित्रोंने उन्हें सम्मान, प्यार और अपनापन दिया है । इन मित्रों का प्यार और अपनापन न होता तो जिन्दगी के न जाने किन गुमनाम अन्धे कुओंमें ही शेष हो गया होता ।

इनकी सारी जिन्दगी इन अन्धे कुओंसे बाहर आने की प्रक्रिया रही । अगर कोई इनसे पूछे कि क्या तुम्हारी जिन्दगी का कोई एक सूत्र रहा है, तो शायद

इनका ध्यान इसी प्रक्रिया की तरफ जायेगा। अपने शरीर, मन और बुध्दि की सीमाओं के पार जाने की कोशिश... उन्हें अतिक्रमित कर सकने का प्रयास जो कुछ उन्हें दिया गया है, या मिला है उससे ऊपर उठने के उपक्रम का ही राजेन्द्र यादवजी का विकास है। वह उन्होंने अनुभव और सम्बन्ध के माध्यम से किया है। स्मृतियों में रहना, स्वप्नोंमें जीना उन्हें बेहद पसन्द है, वह न होता तो शायद वे लेखक न बन सकते। मगर न अतित उनके लिए इतना बडा बोझ बना कि चलना मुश्किल हो, न भविष्य इतना हावी रहा कि हर सम्बन्ध और व्यक्ति को सीढी बनाकर उस भविष्य तक उठ जायें। अतीत और भविष्य दोनों उनके सन्दर्भ रहे हैं, वर्तमान को पीसनेवाले चक्की के पाट नहीं। आनेवाली असुरक्षा से भय नहीं।

उनकी जिन्दगी भौतिक और आर्थिक रूपसे निरन्तर घाटे, और मानसिक-भावनात्मक रूपसे समृध्द होते जाने का इतिहास रही है। साहित्यिक लेखन राजेन्द्र यादव के जीवन का सबसे अधिक महत्वपूर्ण विषय है। राजेन्द्र की जीविका का आधार है।

कृतित्व ---

साहित्य एक ऐसी बंध पत्नी है, जो आपसे ईमानदारी की माँग करती है।

` निज कवित्त केहि लाग न नीका `

- रामचरित मानस: बालकाण्ड १।७।६

की उक्तिके अनुसार राजेन्द्र यादव को अपना लेखन प्रिय है। उन्हें अपने लेखन पर अभिमान है।

` एक छोटा-सा अहंकार हर कलाकार में होता है `[१] किन्तु एक बात है राजेन्द्र यादव का अभिमान दंभ बनकर उनके लेखकीय व्यक्तित्व के विकास में बाधक नहीं बन सका है। किन्तु एक बात निश्चित है, राजेन्द्र यादव ने किसी भी लेखक का अनुकरण करने का प्रयत्न नहीं किया है। और तो और राजेन्द्र यादव ने स्वयं अपनाभी अनुकरण नहीं किया है। इसीलिए मोहन राकेश ने उन्हें` बनता हुआ लेखक`[२] कहा है।

---

१ राजेन्द्र यादव - कहानी : स्वरूप और संवेदना - पृ.क्र.९१।

२ वही मेरा हमदम मेरा दोस्त - पृ.क्र.३८।

राजेन्द्र बहुत सोच-समझकर और पूरी तैयारी के साथ लिखने बैठते हैं । वे जिस थीम को लेकर लिखना आरम्भ करते हैं, वह उनके मन-मस्तिष्क में बहुत पहले से ही घुमडती रहती हैं । एक बार पूरा लिख लेने के बाद वे कुछ समय तक उसे रख छोडते हैं और तब पुन: उसे लिखते हैं । राजेन्द्र पूरी लगन और तन्मयता के साथ लिखते हैं । राजेन्द्र में लेखन की गजब की क्षमता और प्रतिभा हैं । प्रसंगत: राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य में एक दो स्थानोंपर कवि,कहानी लेखक की तुलना भी हुई हैं --` शह और मात` में एक स्थानपर सुजाता ने कहा हैं --` कवि आँखे बन्द करके चले तो ठीक हैं, लेकिन कथाकार को तो आँखे खुली रखनी चाहिए ।`[१] सुजाता ने दूसरे स्थान पर कहा हैं --` गद्यलेखक - कवियों के मुकाबिले ज्यादा प्रोक्टीकल होते हैं । उन्हें बहुत सोचना और दुनिया देखनी पडती हैं न ?`[२]

लेखक को स्वतन्त्र होना चाहिए । कोई भी समझौता उसे ईमानदार नहीं रहने देता । इसके लिए जरूरी हैं कि लेखक आत्मनिर्भर हो लेखन से अलग ऐसी महत्वा-कांक्षाएँ न पाली जायें जो या तो लेखन के साथ सौदा करने के लिए मजबूर करे या फिर चालाकी और झूठ को जिन्दगी में धकेल दे । राजेन्द्र यादव अपने बारे में लिखते हैं --` लेखक के प्रति विशेष सम्मान, लिहाज या सावधान,दया कहीं भी व्यवहार को स्वाभाविक नहीं रहने देगी । आप लेखक हैं और रहेंगे, मगर हमेशा ऐसा दिखायी देते रहना क्यों जरूरी हो ? लेखक आप सिर्फ अपनी मेजपर या अकेले कमरे में होंगे बाकी समय एक साधारण आदमी हैं - लोगोंमें घुलता-मिलता,हँसता-बोलता ।`

लेखन बहुत नाजुक, स्वतन्त्र और पवित्र फूल की तरह हैं और उसे हर प्रदूषण या गर्म हवासे बचा कर रखना हैं । हर रचनाकार के पास अपने अनुभवों का एक पूल होता हैं । राजेन्द्र यादव के लेखन के साथ सम्बन्ध बहुत सीधे और ईमानदार रहे हैं । रचनाएँ लेखकोंको बच्चों की तरह प्रिय होती हैं । वह कोई भी रचना हो सकती हैं । नाटक हो, कहानी हो या उपन्यास हो । इन रचना के लिए

---

१ राजेन्द्र यादव - शह और मात - पृ.क्र.५९ ।

२ वही वही पृ.क्र.१०१ ।

अनुभव के क्षण जो हैं वह महत्वपूर्ण हैं । माँ अपने हर बच्चे को बहुत प्यार करती हैं । जिस तरह का,और जिससे वह बच्चा चाहती थी, वही तो उसे नहीं मिलता । अस्तित्व में आ जाने के बाद बच्चे के प्रिय लगने का सिलसिला शुरू होता हैं । फिर भी क्या इसे प्रकृति और पुरुषा के सम्मिलित षाडयन्त्र के रूप में नहीं लिया सकता कि उन्होंने औरत की मानसिकता को इतना अभ्यस्त बना दिया हैं कि बच्चा उसे प्रिय लगने लगता हैं ? भीतर से वह उसे घृणा भी तो कर सकती हैं । यही बात रचना के बारेमें होती हैं । ` सारा आकाश ` बीस साल बाद अचानक यादवजी को प्रिय हो उठा हैं ।

राजेन्द्र यादव जी की साहित्य यात्रा की शरुआत कॉलेज जीवन से ही हो गयी । उनकी पहली ` प्रतिहिंसा ` उसी काल में लिखी । यह कहानी प्रयाग से प्रकाशित होनेवाली कर्मयोगी पत्रिका में छपी । यह पत्रिका १९४७ ई.की मई में प्रकाशित हुई थी । इससे पूर्व उन्होंने देवगिरिको केन्द्र बनाकर एक अनगढ उपन्यास को लिखने का प्रयत्न किया था । उनकी पहली उल्लेखनीय रचना ` खेल खिलौने ` है । १९५१ में ही उनका पहला उपन्यास ` प्रेत बोलते हैं ` लिखा गया था । बाद में यही उपन्यास ` सारा आकाश ` के नाम से कुछ परिवर्तनोंके साथ प्रकाशित हुआ । इसी उपन्यास पर बासु चटर्जी ने १९७२ में चलचित्र तैयार किया ।

हिन्दी साहित्य के प्रति राजेन्द्र की रुचि बचपन से ही रही थी । वे आरंभ से ही उपन्यास और कहानियाँ पढने के शौकीन रहे हैं । इसी शौक ने उन्हें स्वयं लिखने को प्रेरित किया था । इसके साथ ही साहित्यिक संस्थाओंकी गतिविधियोंमें भाग लेना और स्वयं भी कभी-कभी नई संस्थाओं को जन्म देते रहना उनकी आदत में शुमार था ।

राजेन्द्र जी ने ` अक्षर प्रकाशन ` नामक प्रकाशन संस्था खोल ली । ` अक्षर प्रकाशन ` की स्थापना होने तक राजेन्द्र यादव हिन्दी की नई पीढी के प्रमुख कहानीकार और उपन्यासकार माने जाने लगे थे और मन्नू जी की गणना हिन्दी की प्रमुख महिला कहानीकारों में होने लगी थी । उनके कुछ उपन्यास भी प्रकाशित हुए, परन्तु उनके दूसरे उपन्यास ` उखडे हुए लोग ` द्वारा प्राप्त लोकप्रियता में बढोत्तरी करने में असमर्थ रहें । राजेन्द्र यादव ` उखडे हुए लोग ` के

बाद भी उपन्यास लिखते रहे हैं, किन्तु उनकी औपन्यासिक प्रतिभा `उखडे हुए लोग` में अपनी चरम शक्ति और सौन्दर्य का प्रदर्शन कर उसे अमर कृति बना चुकी थी। जैसे प्रेमचन्द के `गोदान` की तुलना में उनके अन्य उपन्यास, यशपाल के `झूठा - सच` के सामने उनकी अन्य रचनाएँ, अमृतलाल के `बूँद और समुद्र` के आगे उनके दूसरे उपन्यास कहीं भी नहीं ठहरते, फीके प्रतीत होते हैं, उसी प्रकार राजेन्द्र यादव के `उखडे हुए लोग` के सामने उनके परवर्ती सारे उपन्यास कहीं भी नहीं ठहर पाते।

राजेन्द्र यादव को लिखने में कभी भी जल्दी नहीं हुई। वह एक विषय पर पहले खूब अच्छी तरह से सोचते हैं। फिर उसका रफ खाका तैयार करते हैं। उसके बाद धीरे-धीरे लिखना आरंभ करते हैं। उनकी एक साधारण कहानी का लेखन भी कई बैठकों में पूरा हो पाता है। एक बार पूरा लिख लेने के पश्चात वे उसे पुन: एक आलोचक की दृष्टि से पढते हैं, संशोधन-परिवर्द्धन करते हैं। तब उसे अन्तिम बार फिर से पूरा लिखते हैं। यही कारण है कि उनकी कहानियाँ और उपन्यास सुगठित होते हैं।

कहानी तथा उपन्यास के साथ-साथ उन्होंने पत्र एवं डायरी लेखन भी किया। डायरी लेखन का प्रभाव उनके रचनात्मक साहित्य पर देखा जा सकता है। राजेन्द्र यादवजी ने अपने साहित्य में स्थान-स्थानपर यथार्थ जीवन के अनुभवों की अभिव्यक्ति पर बल दिया है। वे मानते हैं, आदर्श या किसी बाहरी अंकुश की झोंक में मानव हृदय की सच्चे भावनाओं, अनुभूतियों और उनकी संभावनाओंको जानबूझकर भुला देने को वे बेईमानी मानते हैं। आज वे हिन्दी कथा जगत के जानेमाने लेखक हैं। लेखन को उन्होंने साठ छ: उपन्यास लिखे हैं।

रचनात्मक साहित्य के अतिरिक्त उन्होंने आलोचनात्मक साहित्य भी लिखा है। यह साहित्य विशेषत: कहानी और उपन्यास की आलोचनासे संबंधित है। दोनों ही विधाओंकी सैद्धान्तिक और व्यावहारिक आलोचनाएँ उन्होंने की है। राजेन्द्र यादवजी का लेखन साहित्य मध्यवर्गसे लेकर ही लिखा गया है। उनके साहित्य में व्यक्ति प्रधान है। सामाजिक समस्याओंका चित्रण उनमें कम पाया जाता है, जो भी सामाजिक समस्याओंके चित्रित किया गया है वह मध्यमवर्गीय

लेखक के अनुभव के क्षेत्र से सम्बन्धित हैं । अपने निजी अनुभवोंपर उनका अत्यन्त बल रहा है । उनका यह अनुभव वैयक्तिक स्तर पर स्थूल रूपमें अनुभूत हो ऐसे नहीं हैं तो लेखकीय व्यक्तित्व के आधारपर सूक्ष्म रूपसे तादात्म्य के बलपर भी यह अनुभव भोगे हुए यथार्थ की कोटी में आता है । राजेन्द्र यादव की महत्वपूर्ण समस्या लेखकीय व्यक्तित्व से सम्बन्धित है । इसी समस्यापर उन्होंने बहुत चिन्तन किया है ।

उनके साहित्य के बारेमें कहा जाता है कि उनके लेखन में शिल्पका आग्रह अत्यधिक है । नये-नये प्रयोगों की उत्कट लालसा, यथार्थवादी लेखन में दिखाई देती है । ` देवताओं की मूर्तियाँ ` कहानी संकलन की हर कहानी किसी-न-किसी को समर्पित है ।

इस प्रकार से दिखाई देता है कि राजेन्द्र यादव जी का समूचा व्यक्तित्व लेखकीय है । अपना पूरा जीवन साहित्य सेवा के लिए ही बीता रहे हैं । स्वतन्त्र रूपसे लेखन का कार्य करते हुए वे अपनी रुचि के अनुवाद का कार्य भी करते रहे । लेखक के रूपमें कार्य करते हुए उन्होंने प्रकाशकोंद्वारा किये जानेवाले लेखकों के शोषाण का अनुभव किया इस शोषाण को समाप्त करने कीइच्छासे प्रेरित होकर उन्होंने प्रकाशन का कार्य भी किया है । आज भी वे अक्षर प्रकाशन का कार्य संभाले हुए हैं ।

यादव जी के उपन्यास --

` सारा आकाश ` यादव जी का पहला उपन्यास है, जिसे उन्होंने सन १९५१ में लिखा था और जो सन १९५२ में ` प्रेत बोलते हैं ` के नामसे प्रकाशित हुआ था । इसमें देश की बदलती सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियोंका चित्रण निम्न मध्यवर्गीय समाज के परिप्रेक्ष्य में किया गया है ।

स्वयं राजेन्द्र यादव के शब्दों में -- ` सारा आकाश ` प्रमुखत: निम्नमध्य - - वर्गीय युवक के अस्तित्व के संघर्ष की कहानी है, आशाओं, महत्वाकांक्षाओं और आर्थिक, सामाजिक सीमाओंके बीच चलने द्वन्द्व , हारने - थकने और कोई रास्ता निकालने की बेचैनी की कहानी है । `

`उखड़े हुए लोग` यादव जी का दूसरा उपन्यास है जो कि देश की बदलती राजनैतिक,आर्थिक,सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियोंका दर्पण है । प्रस्तुत उपन्यास में एक ओर परिस्थितियों के प्रति विद्रोह कर अपनी तस्वीर खुद बनाने के लिए निकल पडी मध्यवर्ग की नई पीढ़ीका चित्रण है तो दूसरी ओर वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति तथा पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उसके उखड जाने की व्यथा है । इस उपन्यास में मध्यवर्गीय जीवन के परिप्रेक्ष्यमें देश की राजनीतिक,आर्थिक,सामाजिक तथा सांस्कृतिक दशा का बडा सशक्त चित्रण पाया जाता है ।

`कुलटा` उपन्यास में देश के मध्यवर्ग की जड सामाजिक,सांस्कृतिक तथा नैतिक परिस्थितियों का चित्रण मिलता है जिसे मिसेज तेजपाल के माध्यम से लेखक ने नपुंसक साबित किया है । इस उपन्यास में लेखक समय के साथ चलने का संकेत करता है । स्वयं राजेन्द्र यादव के शब्दों में हमारी नैतिक,सामाजिक जड परम्पराओं, रूढियों तथा जीवन की अप्रतिरोध्य उद्दाम शक्तिके संघर्ष और द्वन्द्व की अपनी समझमें मैंने `कुलटा` में कही है । ये सामाजिक रूढियाँ और जड परम्पराएँ जिनकी अपनी जीवन शक्ति विगलित और समाप्त हो चुकी हैं ... आज नपुंसक हो गई हैं ।`

`शह और मात` उपन्यास में वर्तमान सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियोंके फलस्वरूप कलाकार उदयके जीवन की व्यथा और उसके खण्डित व्यक्तित्वका रूपांकन हुआ है ।

राजेन्द्र यादव के `अनदेखे अनजान पुल` उपन्यास में कुण्ठा की ग्रन्थि से जकडी निम्नी और उसके अभाव ग्रस्त जीवन का चित्रण पाया जाता है जो कि वर्तमान कालीन विषम ,आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियोंका परिणाम है ।

`एक इंच मुस्कान` उपन्यास में यादवजी ने लेखक के खण्डित व्यक्तित्वको प्रकट करते हुए आज की परिवर्तित सामाजिक,आर्थिक तथा पारिवारिक परिस्थितियोंको व्यायित किया है ।

`मन्त्रविध्द` उपन्यास वर्तमान मध्यवर्गीय युवक युवतियोंके प्यार की प्रातिनिधिक कहानी है। इसमें आर्थिक संकट, बेरोजगारी, महानगर की महँगी जिन्दगी, जगह की किल्लत आदि के परिप्रेक्ष्य में देश की स्वातन्त्र्योत्तर दशा और मध्यवर्गीय लोगों के जीवन का वास्तविक चित्रण मिलता है।

राजेन्द्र यादव की प्रकाशित रचनाएँ

उपन्यास

१)	प्रेत बोलते हैं	-	रचनाकाल १९५१
	(सारा आकाश का मूल रूप)		प्रयुक्त संस्करण - १९५२
२)	उखड़े हुए लोग	-	प्रथम संस्करण १९५६
			प्रयुक्त संस्करण १९७५
३)	कुलटा	-	प्रथम संस्करण १९५८
			प्रयुक्त संस्करण १९६९
४)	शह और मात	-	प्रथम संस्करण १९५९
५)	अनदेखे अनजान पुल	-	प्रथम संस्करण १९६३
			प्रयुक्त संस्करण १९५९
६)	मंत्रविध्द	-	प्रथम एवं प्रयुक्त संस्करण १९६७
७)	एक इंच मुस्कान	-	प्रथम `ज्ञानोदय` में सन् १९६१
	(मन्नू भंडारी के साथ)		

कहानी संकलन --

१)	देवताओंकी मूर्तियाँ	-	प्रथम एवं प्रयुक्त संस्करण १९५२
२)	खेल-खिलौने	-	प्रथम एवं प्रयुक्त संस्करण १९५४
३)	जहाँ लक्ष्मी कैद है	-	प्रथम संस्करण १९५७
			प्रयुक्त संस्करण १९६०
४)	छोटे-छोटे ताजमहल	-	राजपाल अॅन्ड सन्स का प्रकाशन १९६१
५)	किनारे से किनारे तक	-	प्रथम एवं प्रयुक्त संस्करण १९६३

६) टूटना - अक्षर प्रकाशन का संस्करण १९७७

७) अपने पार - प्रथम एवं प्रयुक्त संस्करण १९६८

८) मेरी प्रिय कहानियाँ - प्रथम एवं प्रयुक्त संस्करण १९७१

९) ढोल - प्रथम एवं प्रयुक्त संस्करण १९७२

१०) घर की तलाश - किशोरोंके लिए लिखित कहानियाँ १९८०

११) परी नहीं मरती - किशोरोंके लिए लिखित कहानियाँ १९७८

कविता संकलन --

१) आवाज तेरी है - प्रथम संस्करण १९६०

सम्पादन कार्य --

१) नये कहानीकार - पुस्तकमाला

२) एक दुनिया - समानांतर

३) कथायात्रा

४) हिन्दी की आपत्तिजनक कहानियाँ -

संस्मरण (व्यक्ति चित्र)

१) औरोंके बहाने - प्रथम संस्करण सन् १९८०

समीक्षा -

१) कहानी : स्वरूप और संवेदना - प्रथम संस्करण १९६८

२) अठारह उपन्यास - प्रथम संस्करण सन् १९८१

३) उपन्यास : स्वरूप और संवेदना

अनुवाद

क) उपन्यास --

१) अजनबी	-	मूल लेखक अलबेयर कामू
२) युगनेता	-	मूल लेखक लर्मन्तोव
३) एक मछुआ: एक मोती	-	मूल लेखक स्टाईन बैंक
४) वसंत प्लावन	-	मूल लेखक तुर्गनेव
५) हमारे युग का एक नायक	-	मूल लेखक लर्मन्तोव
६) टक्कर	-	मूल लेखक चेखव
७) प्रथम प्रेम	-	मूल लेखक तुर्गनेव

ख) नाटक --

१) हँसनी	-	मूल लेखक चेखव
२) चेरी का बगीचा	-	मूल लेखक चखव
३) तीन बहनें	-	मूल लेखक चेखव

निष्कर्ष --

यादव जी के उपन्यासोंका प्रतिपल परिवर्तित परिस्थितियोंसे गहरा सम्बन्ध है। यादव जी की प्रत्येक औपन्यासिक कृतिपर बदलती परिस्थितियोंका प्रभाव है। वे समय के साथ और आँखे खोलकर चलनेवाले कलाकार है। उनका उपन्यास साहित्य परिस्थितियोंकी उपज है। उपन्यासकार,कहानीकार,कवि, प्रकाशक,अनुवादक तथा समीक्षक राजेन्द्र यादव का जीवन अँधेरे से रोशनी की यात्रा है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। अपने लेखन मे यादवजी स्थान-स्थान पर जीवनानुभव की अभिव्यक्ति पर बल दिया है। कोई भी संवेदनशील पाठक उनके उपन्यासोंमें अपनी तस्वीर कहीं-न-कहीं अवश्य देख सकता है। अनुभूति की प्रामाणिकता और अभिव्यक्ति की क्षमता राजेन्द्र यादव के उपन्यास और कहानी साहित्य में है।